DR. SUMAN LAL RAY
Assistant professor,
Deptt. of samkrit,
S.R.A.P. college, Bara chakia

B.A. (Hon.), Part — II
Subject — samkrit
Paper — IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)

श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद

श्लोक सं० — 33

गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्थितं चेतः।
(पश्चादसंस्तुतं)
चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य॥

अन्वयः

प्रतिवातं नीयमानस्य केतोः इव मम शरीरं पुरो गच्छति चीनांशुकमिव असंस्थितं (असंस्तुतं) चेतः पश्चात् धावति।

अनुवाद

यद्यपि मेरा शरीर आगे को चल रहा है, किन्तु बेवश हुआ मेरा मन पीछे शकुन्तला की ओर उसी प्रकार दौड़ रहा है जिस प्रकार वायु के विपरीत दिशा में ले जाई जाने वाली ध्वजा का फला कपड़ा पीछे की ओर फहराता है।